आवश्यक निवेदन

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री, तालिकाएँ एवं चित्र आदि श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा द्वारा तैयार किये गए हैं |
इनका अन्यत्र एवं अन्य भाषा में उपयोग करने के पूर्व उनसे अनिवार्यतः संपर्क कर लें |

fppt.com

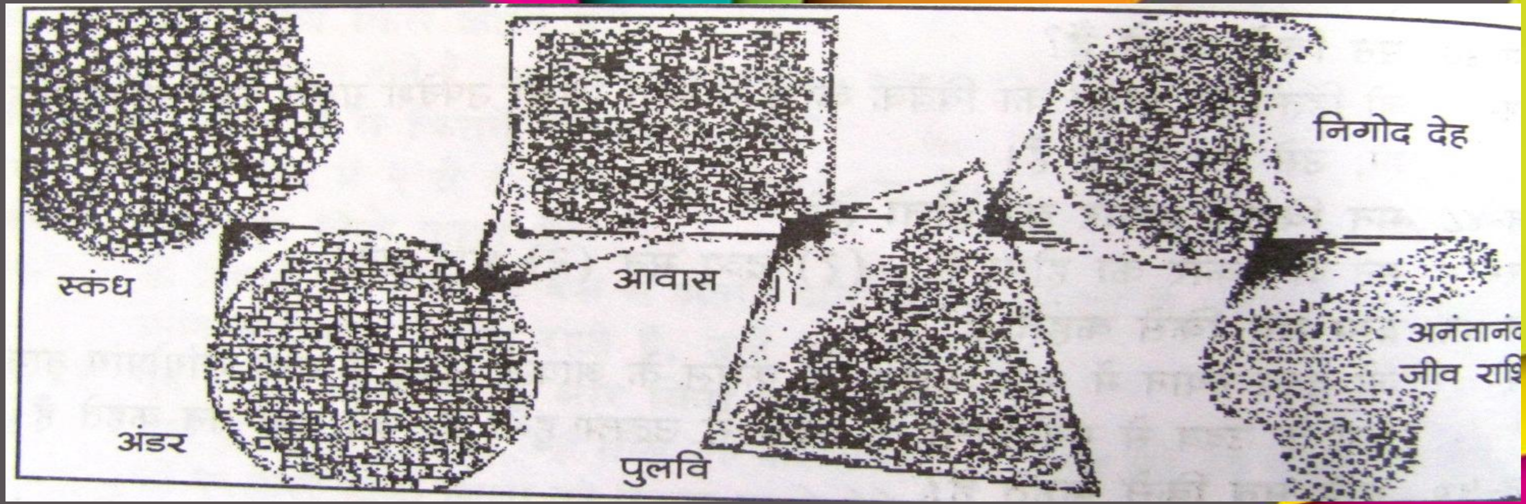

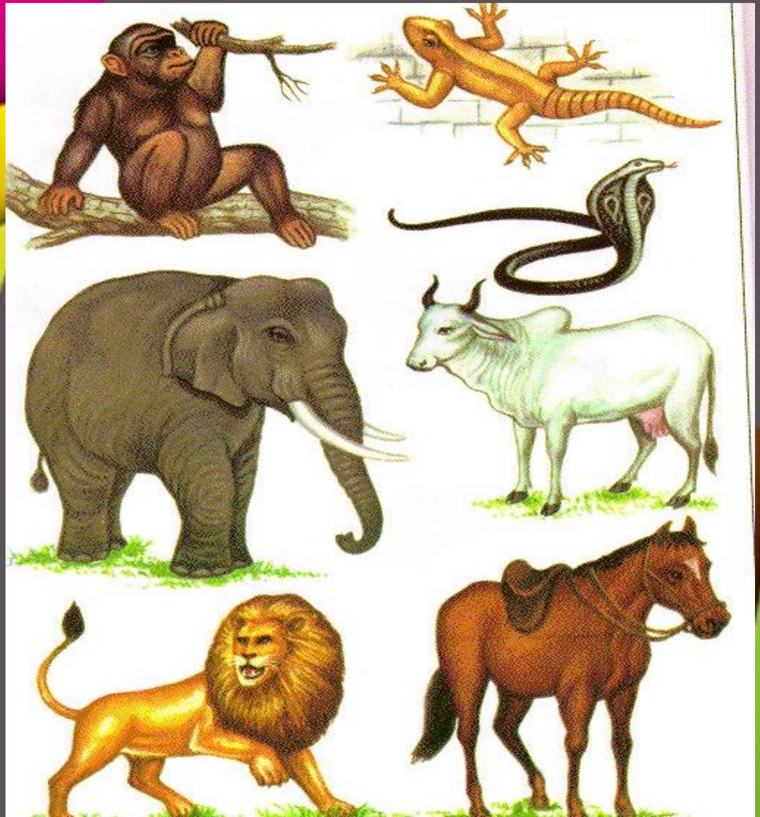

काय मार्गणा

Presentation Developed By: Smt. Sarika Chhabra

गाथा 1 : मंगलाचरण

सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं।

गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं॥

- जो सिद्ध, शुद्ध एवं अकलंक हैं एवं
- जिनके सदा गुणरूपी रत्नों के भूषणों का उदय रहता है,
- ऐसे श्री जिनेन्द्रवर नेमिचंद्र स्वामी को नमस्कार करके
- जीव की प्ररूपणा को कहूंगा ।

fppt.com

जाईअविणाभावी, तसथावरउदयजो हवे काओ।
सो जिणमदम्हि भणिओ, पुढवीकायादिछब्भेयो॥181॥

- अर्थ - जाति नामकर्म के अविनाभावी
- त्रस और स्थावर नामकर्म के उदय से होने वाली
- आत्मा की पर्याय को जिनमत में काय कहते हैं।
- इसके छह भेद हैं - पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति और त्रस ॥181॥

fppt.com

काय मार्गणा

- पृथ्वीकायिक
- जलकायिक
- अग्निकायिक
- वायुकायिक
- वनस्पतिकायिक
- त्रसकायिक

fppt.com

पुढवी आऊ तेऊ, वाऊ कम्मोदयेण तत्थेव।
णियवण्णचउक्कजुदो, ताणं देहो हवे णियमा॥182॥

- अर्थ - पृथिवी, अप्-जल, तेज-अग्नि, वायु इनका शरीर नियम से अपने-अपने पृथिवी आदि नामकर्म के उदय से, अपने-अपने योग्य रूप, रस, गन्ध, स्पर्श से युक्त पृथिवी आदिक में बनता है ॥182॥

fppt.com

विशेष

- स्थावर नामकर्म की भेदरूप पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु कर्म के उदय से पृथ्वी, जल आदि शरीर बनता है।
- ये पृथ्वी, जल आदि के शरीर, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण वाले होते हैं।
- इन शरीरों में रहने वाले जीव पृथ्वीकायिक, जलकायिक आदि कहलाते हैं।
- अर्थात् पृथ्वी है शरीर जिनका, वे पृथ्वीकायिक हैं।

fppt.com

पृथ्वी के भेद

पृथ्वी	• पृथ्वी सामान्य
पृथ्वीजीव	• पृथ्वी नामकर्म के उदय से सहित विग्रह गति का जीव जो अभी पृथ्वी शरीर धारण करेगा (जीव मात्र)
पृथ्वीकायिक	• पृथ्वीरूप शरीर के सम्बन्ध से सहित जीव (जीव + शरीर)
पृथ्वीकाय	• जिसमे से जीव निकल गया है ऐसा पृथ्वी शरीर (शरीर मात्र)

नोट : ऐसे ही सर्व छह कायों में भेद समझना ।

fppt.com

बादरसुहुमुदयेण य, बादरसुहुमा हवंति तद्देहा।
घादसरीरं थूलं, अघाददेहं हवे सुहुमं॥183॥

- अर्थ – पृथ्विकायिक आदि जीव, बादर नामकर्म के उदय से बादर और सूक्ष्म नामकर्म के उदय से सूक्ष्म होते हैं।
- जो शरीर दूसरे को रोकने वाला हो अथवा जो स्वयं दूसरे से रुके उसको बादर (स्थूल) शरीर कहते हैं। और
- जो दूसरे को न तो रोके और न स्वयं दूसरे से रुके उसको सूक्ष्म शरीर कहते हैं ॥183॥

fppt.com

जीव के प्रकार

बादर

- बादर नामकर्म के उदय से उत्पन्न
- अन्य पदार्थ से रूके और
- अन्य पदार्थ को रोके
- ऐसे शरीर के धारक जीव

सूक्ष्म

- सूक्ष्म नामकर्म के उदय से उत्पन्न
- अन्य पदार्थ से ना रूके
- अन्य पदार्थ को ना रोके
- ऐसे शरीर के धारक जीव

fppt.com

तद्देहमंगुलस्स, असंखभागस्स विंदमाणं तु।
आधारे थूला ओ, सव्वत्थ णिरंतरा सुहुमा॥184॥

- अर्थ - बादर और सूक्ष्म दोनों ही तरह के शरीरों की अवगाहना का प्रमाण घनांगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण है।
- इनमें से स्थूल शरीर आधार की अपेक्षा रखता है किन्तु सूक्ष्म शरीर, बिना अन्तर (व्यवधान) के ही सब जगह अनंतानन्त भरे हुए हैं। उनको आधार की अपेक्षा नहीं रहा करती ॥184॥

fppt.com

पृथ्विकायिक आदि की अवगाहना

- इन पृथ्विकायिक आदि चारों कायों की अवगाहना $\frac{\text{घनांगुल}}{\text{असं}}$ है ।
- जघन्य भी $\frac{\text{घ}}{\text{असं}}$ है । और उत्कृष्ट भी $\frac{\text{घ}}{\text{असं}}$ है ।
- परन्तु जघन्य से उत्कृष्ट असंख्यात गुणी है ।

fppt.com

विशेष

- जो अन्य पुद्गलों के आश्रय-सहित है, वह बादर काय है । जो बिना किसी अन्य पुद्गल के आश्रय-सहित हैं, सर्वत्र लोक में हैं, वे सूक्ष्म काय हैं ।
- यद्यपि बादर की अवगाहना से सूक्ष्म की अवगाहना अधिक हो सकती है, तथापि सूक्ष्मरूप से परिणत स्कन्ध अघातरूप हैं, अन्य से रोके नहीं जाते । इसलिये सूक्ष्म ही कहलाते हैं ।
- ऋद्धिधारी मुनि, देव आदि का शरीर बादर ही है । तप के अतिशय के प्रभाव से वज्र में से निकल जाना आदि कार्य देखे जाते हैं ।

fppt.com

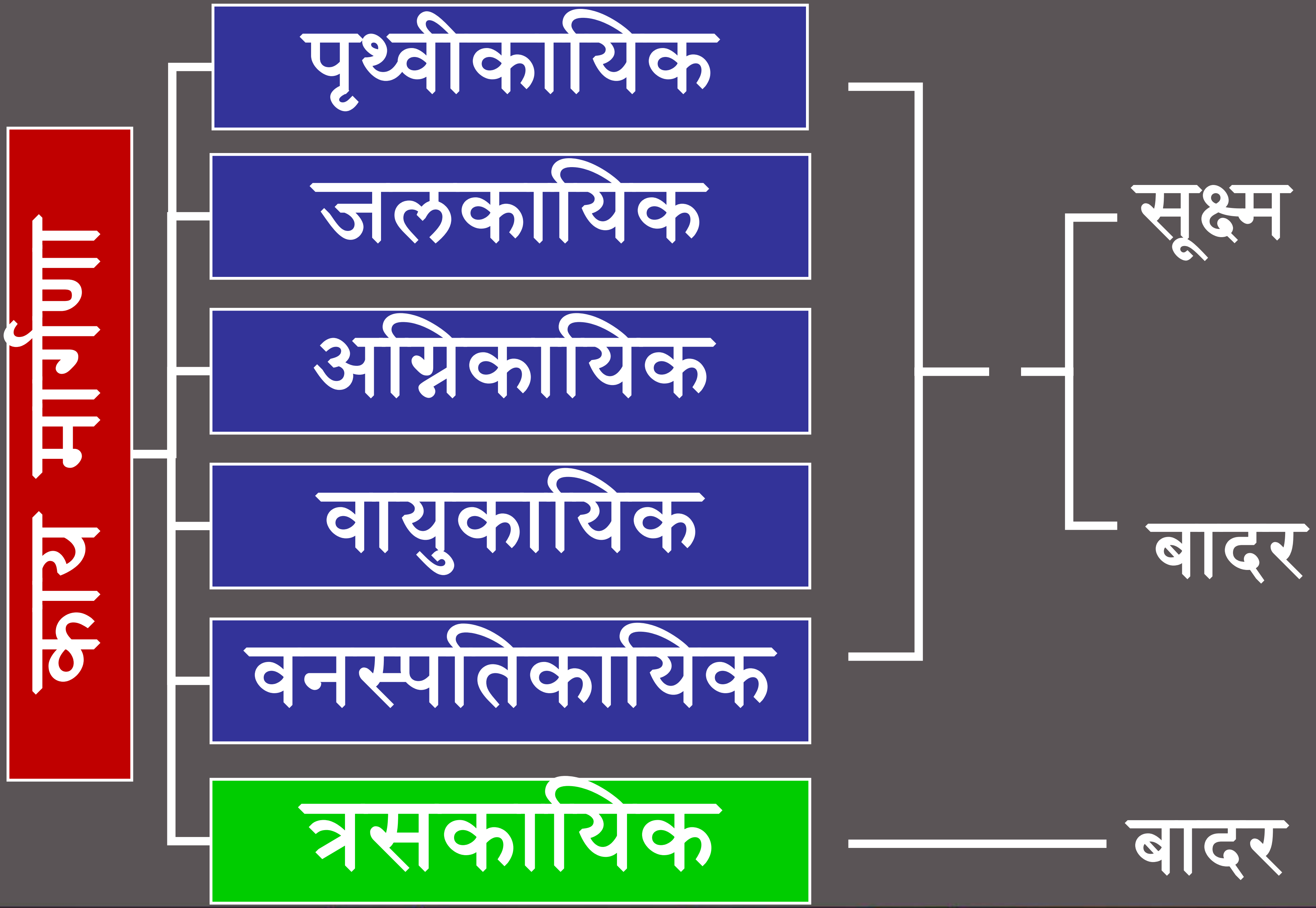
काय मार्गणा
पृथ्वीकायिक
जलकायिक
अग्निकायिक
वायुकायिक
वनस्पतिकायिक
सूक्ष्म
बादर
त्रसकायिक
बादर
fppt.com

उदये दु वणप्फदिकम्मस्स य जीवा वणप्फदी होंति। पत्तेयं सामण्णं, पदिट्ठिदिदरे त्ति पत्तेयम्॥185॥

- अर्थ - स्थावर नामकर्म का अवान्तर विशेष भेद जो वनस्पति नामकर्म है उसके उदय से जीव वनस्पति होते हैं।
- उनके दो भेद हैं - एक प्रत्येक दूसरा साधारण।
- प्रत्येक के भी दो भेद हैं, प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित ॥185॥

fppt.com

वनस्पति नामकर्म के उदय से जो जीव की पर्याय होती है, उसे वनस्पतिकायिक कहते हैं ।

वनस्पतिकायिक

साधारण (एक शरीर के अनंत स्वामी)

प्रत्येक (एक शरीर एक स्वामी)

प्रतिष्ठित

जिस प्रत्येक शरीर के आश्रय से निगोदिया जीव रहें

अप्रतिष्ठित

जिस प्रत्येक शरीर के आश्रय से निगोदिया जीव नहीं रहते

fppt.com

मूलग्गपोरबीजा, कंदा तह खंदबीज बीजरुहा।
सम्मुच्छिमा य भणिया, पत्तेयाणंतकाया य॥186॥

- अर्थ - जिन वनस्पतियों का बीज मूल, अग्र, पर्व, कन्द या स्कन्ध है; अथवा
- जो बीज से उत्पन्न होती हैं; अथवा
- जो सम्मूर्च्छन हैं –
- वे सभी वनस्पतियाँ सप्रतिष्ठित तथा अप्रतिष्ठित दोनों प्रकार की होती हैं ॥186॥

fppt.com

वनस्पति के प्रकार (उत्पत्ति की अपेक्षा)

	उत्पत्ति का कारण		जैसे—
1	मूल	Root	अदरक, हल्दी
2	अग्र	Front	गुलाब
3	पर्व	Knot	ईख, बेंत
4	कन्द	Underground stem	पिंडालू
5	स्कन्ध	Stock	पलाश, ढाक
6	सम्मूर्छन		घास
7	बीज	Seed	गेहू, धान

नोट—ये सभी प्रतिष्ठित व अप्रतिष्ठित दोनों प्रकार की होती हैं। ये सारी प्रत्येक वनस्पति हैं।

fppt.com

सम्मूर्छन भेद वाली वनस्पति

- वनस्पति का सम्मूर्छन नाम का भेद रूढ़ि से सम्मूर्छन है, जन्म के कारण नहीं ।
- जन्म-भेद की अपेक्षा सभी प्रकार की वनस्पति सम्मूर्छन ही है ।

fppt.com

गूढसिरसंधिपव्वं, समभंगमहीरुहं च छिण्णरुहं।
साहारणं सरीरं, तव्विवरीयं च पत्तेयं॥187॥

- अर्थ - जिनकी शिरा–बहिः स्नायु, सन्धि–रेखाबन्ध, और पर्व–गाँठ अप्रकट हों, और
- जिसका भंग करने पर समान भंग हो, और
- दोनों भंगों में परस्पर हीरुक–अन्तर्गत सूत्र–तन्तु न लगा रहे तथा
- छेदन करने पर भी जिसकी पुनः वृद्धि हो जाय, उनको सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति कहते हैं। और
- जो विपरीत हैं, इन चिह्नों से रहित हैं वे सब अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति कही गयी हैं ॥187॥

fppt.com

शिरा, संधि आदि के अर्थ

गूढ़	शिरा	संधि	पर्व	तन्तु
बाह्य में दिखे नहीं	लंबी लकीर सी	बीच में जुड़ा हुआ	गाठ, पोर, गठान	सूत जैसा तन्तु हो
	ककड़ी	नारंगी	गन्ना, बेंत	चीकू में, पीपल का पत्ता

fppt.com

सप्रतिष्ठित वनस्पति की पहचान

गूढ़शिरा

- जिनकी लकीर प्रगट न हो
- छोटी ककड़ी, गिलकी, लौकी

गूढ़संधि

- जिनकी संधि प्रगट न हो
- छोटी नारंगी

गूढ़पर्व

- जिनका पर्व प्रगट न हो
- पतला गन्ना, बेंत

शिरा प्रगट है

शिरा प्रगट है

कुछ चित्र

सप्रतिष्ठित वनस्पति की पहचान

तन्तु

- जिसे तोड़ने पर तंतु न लगा रहे

समभंग

- जिसको तोड़ने पर समभंग हो, समान बराबर टूटे जैसे कि चाकू से सुधारा हो
- पतली गिलकी, ककड़ी

छिन्नरुह

- जिसे काटने पर पुनः उग जाता है
- आलू

सप्रतिष्ठित वनस्पति की पहचान

- सप्रतिष्ठित को उपचार से साधारण कहा है ।
- वास्तविक साधारण जीव तो हमारे ज्ञान का विषय भी नहीं बन पाते ।

fppt.com

अप्रतिष्ठित प्रत्येक

पूर्वोक्त से विपरीत लक्षण वाली

अर्थात् जिनके शिरा, संधि, पर्व आदि प्रगट हों,

तोड़ने पर तंतु आदि लगा रहे और

सममंग न हो ऐसी वनस्पति अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति है

fppt.com

मूले कंदे छल्ली, पवाल सालदलकुसुम फलबीजे। समभंगे सदि णंता, असमे सदि होंति पत्तेया॥188॥

- अर्थ - जिन वनस्पतियों के मूल, कन्द, त्वचा, प्रवाल–नवीन कोंपल अथवा अंकुर, क्षुद्रशाखा–टहनी, पत्र, फूल, फल तथा बीजों को तोड़ने से समान भंग हो, बिना ही हीरुक (तंतु) के भंग हो जाय, उसको सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति कहते हैं और
- जिनका भंग समान न हो उनको अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति कहते हैं ॥188॥

fppt.com

Parts of tree

मूल	• जड़ (Roots)
कन्द	• (Bulb)
छल्ली	• छाल वल्क (Bark)
प्रवाल	• कोपल, अंकुर (Sprout, Seedling)
शाला	• छोटी शाखा (डाल / टहनी) (Twig)

fppt.com

Parts of tree

शाखा	• बड़ी शाखा (डाल / टहनी) (Branch)
दल	• पत्ते (Leaves, foliage)
कुसुम	• फूल (Flower)
फल	• (Fruit)
बीज	• जिससे पुनः उत्पत्ति होती है । (Seeds)

इन सबके समभंग हों, तो प्रतिष्ठित प्रत्येक हैं । यदि समभंग न हों, तो अप्रतिष्ठित प्रत्येक हैं ।

fppt.com

कंदस्स व मूलस्स व, सालाखंदस्स वावि बहुलतरी।
छल्ली साणंतजिया, पत्तेयजिया तु तणुकदरी॥189॥

- अर्थ - जिस वनस्पति के कन्द, मूल, क्षुद्रशाखा या स्कन्ध की छाल मोटी हो उसको अनंतजीव-सप्रतिष्ठित प्रत्येक कहते हैं और
- जिसकी छाल पतली हो उसको अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति कहते हैं ॥189॥

fppt.com

सप्रतिष्ठित वनस्पति

कन्द, मूल, क्षुद्रशाखा या स्कन्ध की छाल मोटी हो

अप्रतिष्ठित वनस्पति

कन्द, मूल, क्षुद्रशाखा या स्कन्ध की छाल पतली हो

fppt.com

बीजे जोणीभूदे, जीवो चंकमदि सो व अण्णो वा।
जे वि य मूलादीया, ते पत्तेया पढमदाए॥190॥

- अर्थ - मूल आदि वनस्पतियों की उत्पत्ति का आधारभूत पुद्गल स्कन्ध योनिभूत - जिसमें जीव उत्पत्ति की शक्ति हो, उसमें जल या कालादि के निमित्त से वही जीव अथवा अन्य जीव भी आकर उत्पन्न हो सकता है। जो मूलादि प्रतिष्ठित वनस्पतियाँ हैं, वे भी उत्पत्ति के अंतर्मुहूर्त तक अप्रतिष्ठित ही होती हैं॥190॥

fppt.com

योनि

- जीव उत्पन्न होने का आधारभूत पुद्‌गल स्कंध

योनिभूत

- जब तक योनि में जीव उपजने की शक्ति है, तब तक वह स्कंध योनिभूत है ।

- मूल आदि बीज के योनिभूत होने पर
- जल या काल आदि का निमित्त मिलने पर
- उस बीज में वही जीव अथवा अन्य जीव उत्पन्न होता है ।

fppt.com

प्रत्येक वनस्पति के नियम

- सारी प्रत्येक वनस्पति प्रारंभ के अंतर्मुहूर्त में अप्रतिष्ठित ही होती है ।
- पश्चात् निगोद जीव द्वारा आश्रय लेने पर सप्रतिष्ठित हो जाती है ।
- वह पुनः अप्रतिष्ठित भी बन सकती है ।

fppt.com

साहारणोदयेण णिगोदसरीरा हवंति सामण्णा।
ते पुण दुविहा जीवा, बादर सुहुमा त्ति विण्णेया॥191॥

- अर्थ - जिन जीवों का शरीर साधारण नामकर्म के उदय के कारण निगोदरूप होता है उन्हीं को सामान्य या साधारण कहते हैं।
- इनके दो भेद हैं - बादर एवं सूक्ष्म ॥191॥

fppt.com

साधारण नामकर्म के उदय से निगोद शरीर के धारक साधारण जीव होते हैं ।

निगोदिया के प्रकार

- बादर
- सूक्ष्म

fppt.com

साहारणमाहारो, साहारणमाणपाणगहणं च। साहारणजीवाणं, साहारणलक्खणं भणियं॥192॥

- अर्थ - इन साधारण जीवों का साधारण अर्थात् समान ही तो आहार होता है और साधारण–समान अर्थात् एक साथ ही श्वासोच्छ्वास का ग्रहण होता है। इस तरह से साधारण जीवों का लक्षण परमागम में साधारण ही बताया है ॥192॥

fppt.com

निगोद

नि = अनन्तपना है निश्चित जिनका, ऐसे जीवों को

गो = एक ही क्षेत्र

द= देता है

अर्थात् जो अनन्त जीवों को एक ही आवास दे उसको निगोद कहते हैं

fppt.com

साधारण क्या?

- साधारण — जो कार्य एक साथ होते हैं और समान होते हैं ।
- जिनकी आहारादि 4 पर्याप्ति और उनका कार्य साधारण है, उन्हें साधारण जीव कहते हैं ।
- अनन्त जीवों का आहारग्रहण, शरीर बनना, इन्द्रिय बनना, श्वासोच्छ्वास होना — ये सभी जीवों का एक साथ पाया जाता है ।
- अनन्त जीवों की एकसाथ पर्याप्ति प्रारंभ होती है । पूरी भी सबकी एक साथ होती है ।

fppt.com

**जत्थेक्क मरइ जीवो, तत्थ दु मरणं हवे अणंताणं।
वक्कमइ जत्थ एक्को, वक्कमणं तत्थ णंताणं॥193॥**

- अर्थ - साधारण जीवों में जहाँ पर एक जीव मरण करता है वहाँ पर अनंत जीवों का मरण होता है और
- जहाँ पर एक जीव उत्पन्न होता है वहाँ अनंत जीवों का उत्पाद होता है ॥193॥

fppt.com

साधारण जीवों से सम्बंधित विशेष बातें

- जब एक जीव मरता है, उसके साथ समान आयुस्थिति के अनन्तानन्त जीव मरते हैं ।
- जब एक जीव उत्पन्न होता है, तो उसके साथ अनन्तानन्त जीव उत्पन्न होते हैं ।
- ऐसे जन्म और मरण भी निगोदिया जीव के साधारण होते हैं ।
- बादर निगोद शरीर में बादर निगोदिया जीव ही आते हैं ।
- सूक्ष्म निगोद शरीर में सूक्ष्म निगोदिया जीव ही आते हैं ।
- पर्याप्त निगोद शरीर में पर्याप्त निगोदिया जीव ही आते हैं ।
- अपर्याप्त निगोद शरीर में अपर्याप्त निगोदिया जीव ही आते हैं ।
- क्योंकि समान कर्मों के उदय हैं ।

fppt.com

एक शरीर में उत्पत्ति का विधान

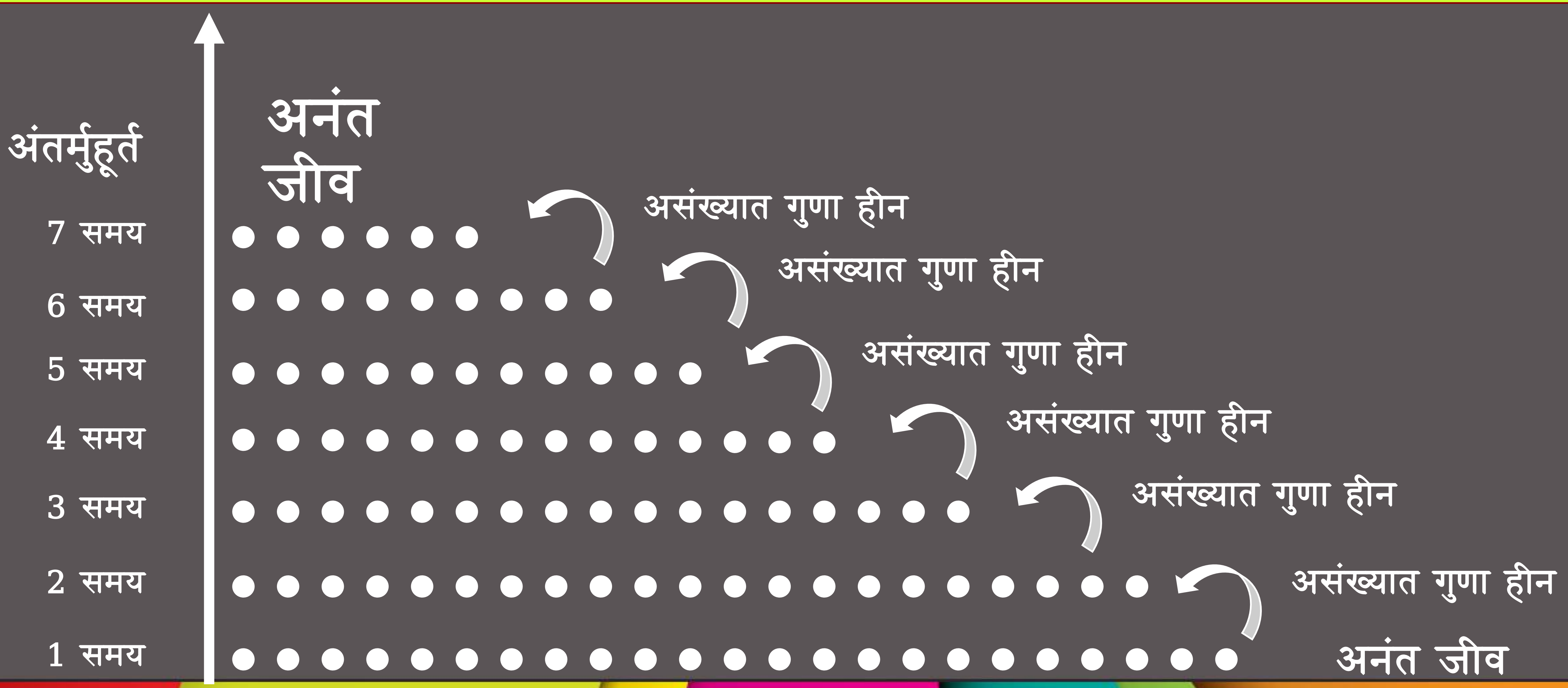

fppt.com

एक शरीर में उत्पत्ति का विधान

अंतर्मुहूर्त तक

- निरंतर जीवों की उत्पत्ति
- उत्पत्ति का अंतर
- निरंतर जीवों की उत्पत्ति
  - उत्कृष्ट = $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$
  - जघन्य = 1 समय
- उत्पत्ति का अंतर
  - उत्कृष्ट = $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$
  - जघन्य = 1 समय
- प्रत्येक समय अनंत जीवों की उत्पत्ति

fppt.com

खंधा असंखलोगा, अंडरआवासपुलविदेहा वि। हेट्ठिल्लजोणिगाओ, असंखलोगेण गुणिदकमा॥194॥

- अर्थ - स्कन्धों का प्रमाण असंख्यात लोकप्रमाण है और
- अंडर, आवास, पुलवि तथा देह ये क्रम से उत्तरोत्तर असंख्यात लोक-असंख्यात लोक गुणित हैं, क्योंकि वे सभी अधस्तनयोनिक हैं - इनमें पूर्व-पूर्व आधार और उत्तरोत्तर आधेय हैं ॥194॥

fppt.com

पंचगोलक में निगोद शरीर

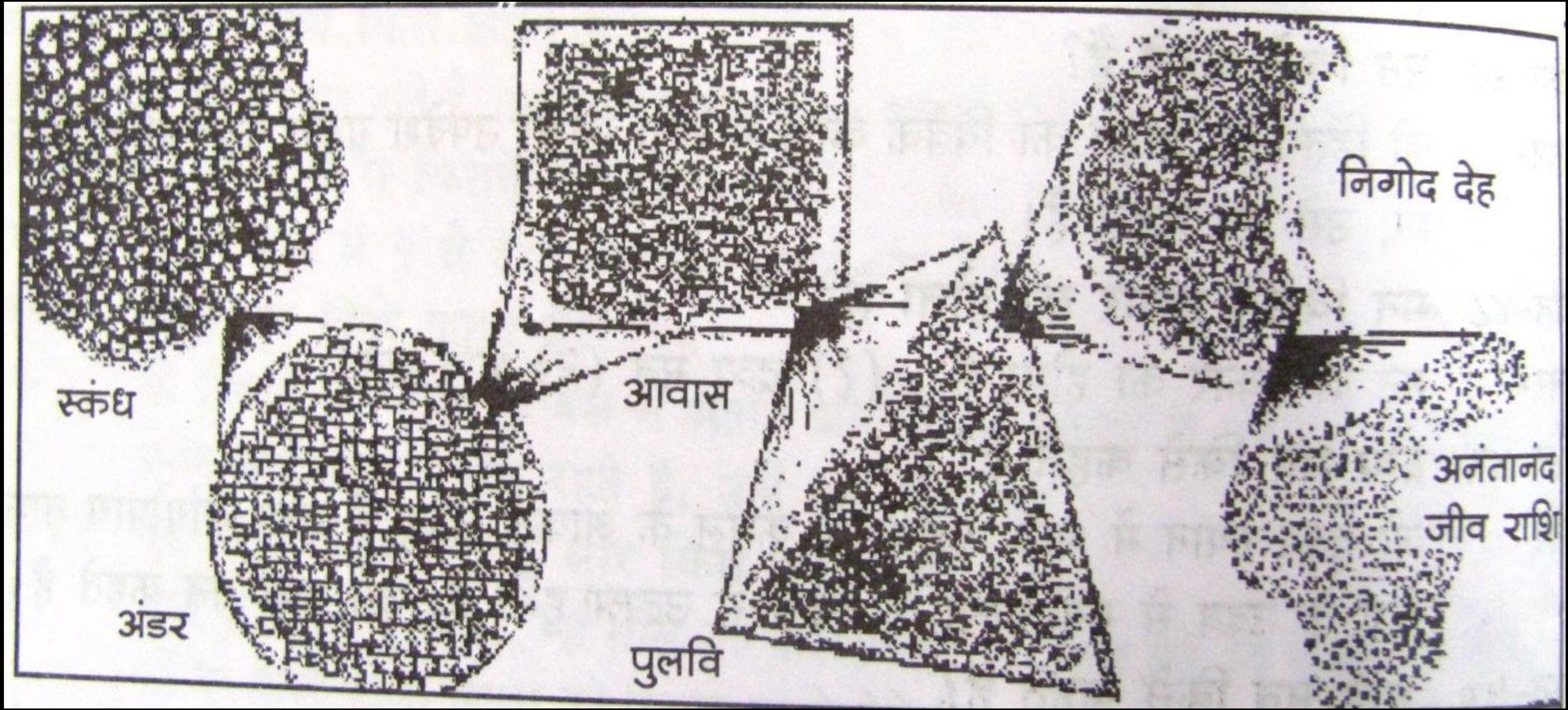

पंचगोलक में निगोद शरीर

स्कंध:	• 1 स्कंध अर्थात् 1 प्रतिष्ठित जीव का शरीर । जिसकी अवगाहना घनांगुल/असंख्यात प्रमाण है ।
अण्डर:	• १ स्कंध में असंख्यात लोक प्रमाण अण्डर
आवास:	• १ अण्डर में असंख्यात लोक प्रमाण आवास
पुलवि:	• १ आवास में असंख्यात लोक प्रमाण पुलवि
निगोद शरीर:	• १ पुलवि में असंख्यात लोक प्रमाण निगोद शरीर
जीव:	• १ निगोद शरीर में अनंत निगोदिया जीव

एक स्कंध के कुल निगोदिया जीव

- 1 निगोद शरीर में = अनंतानंत जीव
- 1 पुलवि में = असंख्यात लो प्र × अनंतानंत जीव
- 1 आवास में = असंख्यात लो प्र × (असंख्यात लो प्र × अनंतानंत जीव)
- 1 अण्डर में = असंख्यात लो प्र × (असंख्यात लो प्र × असंख्यात लो प्र × अनंतानंत जीव)
- 1 स्कंध में = असंख्यात लो प्र × (असंख्यात लो प्र × असंख्यात लो प्र × असंख्यात लो प्र × अनंतानंत जीव)

fppt.com

उदाहरण के लिये माना - अनंतानंत जीव =100, असंख्यात लो प्र = 2

- 1 निगोद शरीर में = 100
- 1 पुलवि में = 2 × 100= 200
- 1 आवास में = 2 × 200=400
- 1 अण्डर में = 2 × 400=800
- 1 स्कंध में = 2 × 800=1600 निगोदिया जीव

fppt.com

जम्बूदीवं भरहो, कोसलसागेदतग्घराइं वा।
खंधंडरआवासा, पुलविशरीराणि दिट्ठंता॥195॥

- अर्थ - जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्र, कौशलदेश, साकेत-अयोध्या नगरी और साकेता नगरी के घर ये क्रम से स्कन्ध, अंडर, आवास, पुलवि और देह के दृष्टांत हैं ॥195॥

fppt.com

बादर निगोदिया जीवों के शरीर के आधार का स्वरूप

<table>
<tr><th></th><th colspan="2"></th><th>पंच गोलक</th><th>दृष्टांत</th></tr>
<tr><td>लोक में</td><td colspan="2">असं. लोकप्रमाण</td><td>स्कन्ध (प्रतिष्ठित प्रत्येक शरीर)</td><td>मध्य लोक में जम्बूद्वीप</td></tr>
<tr><td>एक स्कंध में</td><td>,,</td><td rowspan="4">ये उत्तरोत्तर असं. लोक गुणित हैं</td><td>अंडर</td><td>जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्रादि</td></tr>
<tr><td>एक अंडर में</td><td>,,</td><td>आवास</td><td>क्षेत्रादि में कोशल देशादि</td></tr>
<tr><td>एक आवास में</td><td>,,</td><td>पुलवि</td><td>देशादि में अयोध्या नगरी</td></tr>
<tr><td>एक पुलवि में</td><td>,,</td><td>शरीर</td><td>नगर में घर</td></tr>
<tr><td>एक शरीर में</td><td colspan="2">अनंतानंत</td><td>जीव</td><td>घर में जीव</td></tr>
</table>

एगणिगोदसरीरे, जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा।
सिद्धेहिं अणंतगुणा, सव्वेण विदीदकालेण॥196॥

- अर्थ - समस्त सिद्धराशि का और सम्पूर्ण अतीत काल के समयों का जितना प्रमाण है द्रव्य की अपेक्षा से उनसे अनंतगुणे जीव एक निगोदशरीर में रहते हैं ॥196॥

fppt.com

एक निगोद शरीर में जीवों का प्रमाण

द्रव्य अपेक्षा	सिद्धों से अनंत गुणे
काल अपेक्षा	अतीत काल के समयों से अनंत गुणे
क्षेत्र अपेक्षा	* सर्व आकाश प्रदेश के अनंतवें भाग * लोकाकाश के प्रदेशों से अनंत गुणे
भाव अपेक्षा	* केवलज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेदों के अनंतवें भाग * सर्वावधिज्ञान के विषयभूत भावों से अनंत गुणे

अत्थि अणंता जीवा, जेहिं ण पत्तो तसाण परिणामो।
भावकलंकसुपउरा, णिगोदवासं ण मुंचंति॥197॥

- अर्थ - ऐसे अनंतानन्त जीव हैं कि जिन्होंने त्रसों की पर्याय अभी तक कभी भी नहीं पाई है और जो निगोद अवस्था में होने वाले दुर्लेश्यारूप परिणामों से अत्यन्त अभिभूत रहने के कारण निगादस्थान को कभी नहीं छोड़ते ॥197॥

fppt.com

निगोद (साधारण) के भेद:

नित्य निगोद

- जिसने अनादि काल से अभी तक त्रस पर्याय प्राप्त नहीं की है

इतर निगोद

- जो देव, नारकी, तिर्यंच और मनुष्यों में उत्पन्न होकर पुनः निगोद में उत्पन्न होते हैं
- इसका दूसरा नाम चतुर्गति निगोद भी है

प्रश्न: क्यों निगोद से बाहर नहीं आते ?

भावकलंक की प्रचुरता होने के कारण ।

- नित्य निगोद
  - अनादि अनंत
  - अनादि सांत

fppt.com

क्या नित्य निगोद से जीव कभी निकलते ही नहीं हैं ?

- नहीं, 6 महीना, 8 समय में 608 जीव नित्य निगोद से निकलकर अन्य पर्यायों को प्राप्त करते हैं ।
- भावकलंक की अल्पता होने के कारण निकलते हैं ।

fppt.com

विहि तिहि चहुहिं पंचहिं, सहिया जे इंदिएहिं लोयम्हि।
ते तसकाया जीवा, णेया वीरोवदेसेण॥198॥

- अर्थ - जो जीव दो, तीन, चार, पाँच इन्द्रियों से युक्त हैं उनको वीर भगवान के उपदेशानुसार त्रसकायिक समझना चाहिये ॥198॥

fppt.com

त्रसकायिक जीव

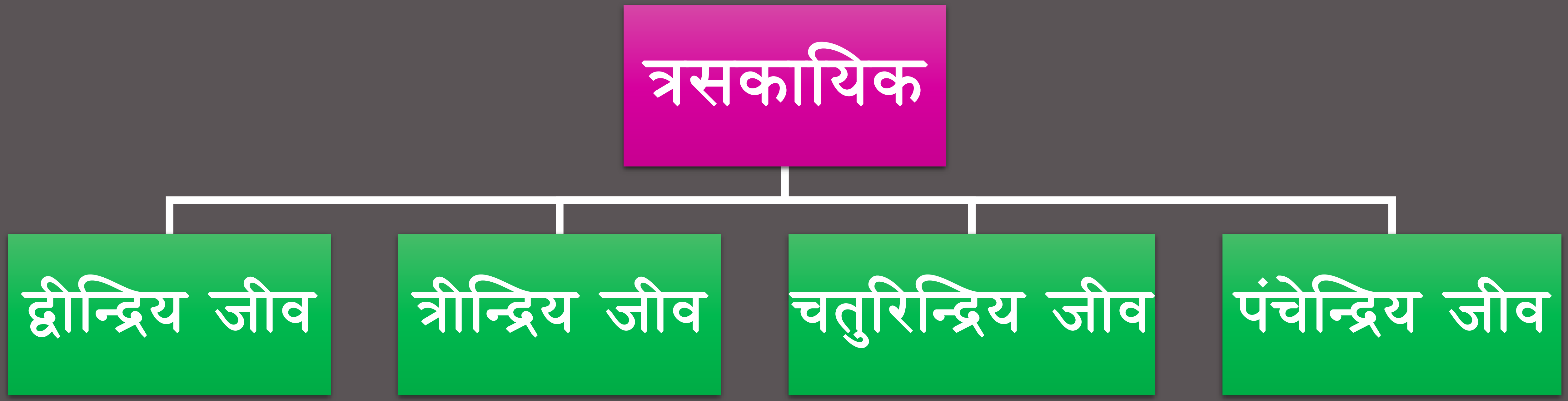

fppt.com

स्थावरकायिक कहा रहते हैं ?

- सारे लोक में, सर्वत्र।
- एक भी लोक का प्रदेश नहीं है, जहा पाँच स्थावरकायिक नहीं हों ।

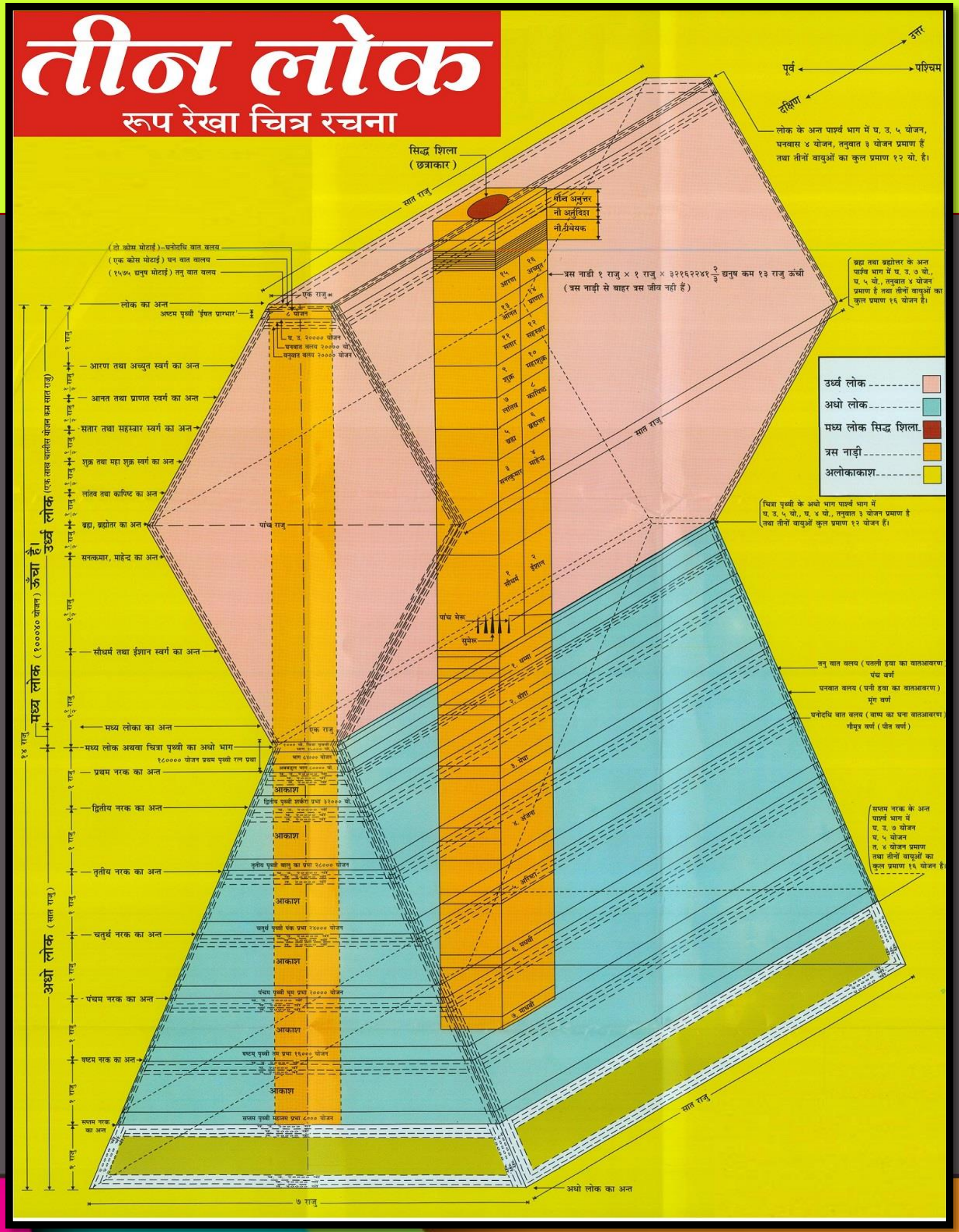

fppt.com

त्रसकायिक कहा रहते हैं ?

- त्रसनाली में ।
- क्या त्रसनाली के बाहर भी हो सकते हैं ?
  - हाँ
  - अपवाद-रूप स्थिति में ।

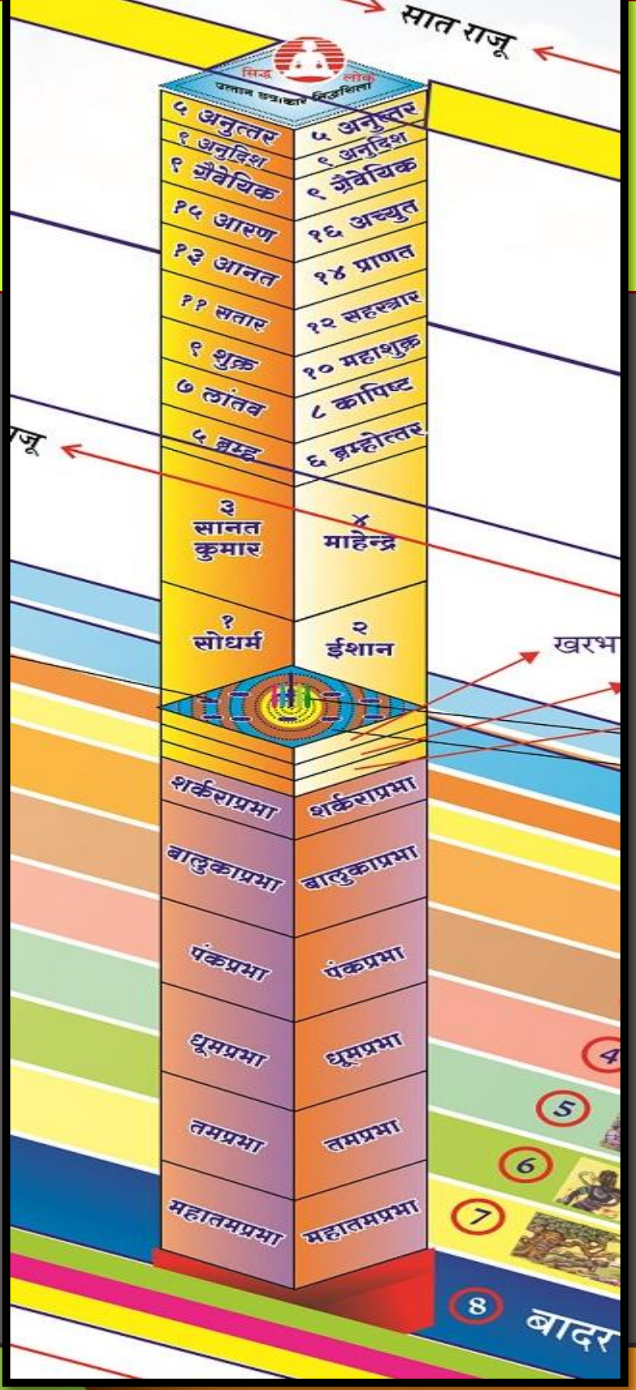

fppt.com

उववादमारणंतिय, परिणदतसमुज्झिऊण सेसतसा। तसणालिबाहिरम्हि य, णत्थि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥199॥

- अर्थ - उपपाद जन्मवाले और मारणान्तिक समुद्घातवाले त्रस जीवों को छोड़कर बाकी के त्रस जीव त्रसनाली के बाहर नहीं रहते यह जिनेन्द्रदेव ने कहा है ॥199॥

fppt.com

त्रसकायिक के त्रसनाली के बाहर पाए जाने के अपवाद के समय

- उपपाद के समय
- मारणान्तिक समुद्घात के समय
- केवली समुद्घात के समय

fppt.com

उपपाद के समय

- त्रसनाली के बाहर स्थित कोई एकेन्द्रिय जीव त्रसपर्याय को बांधता है ।
- तब मरण करके प्रथम समय में त्रसनाली के बाहर है, परन्तु त्रस जीव है ।
- ऐसी एक स्थिति है ।

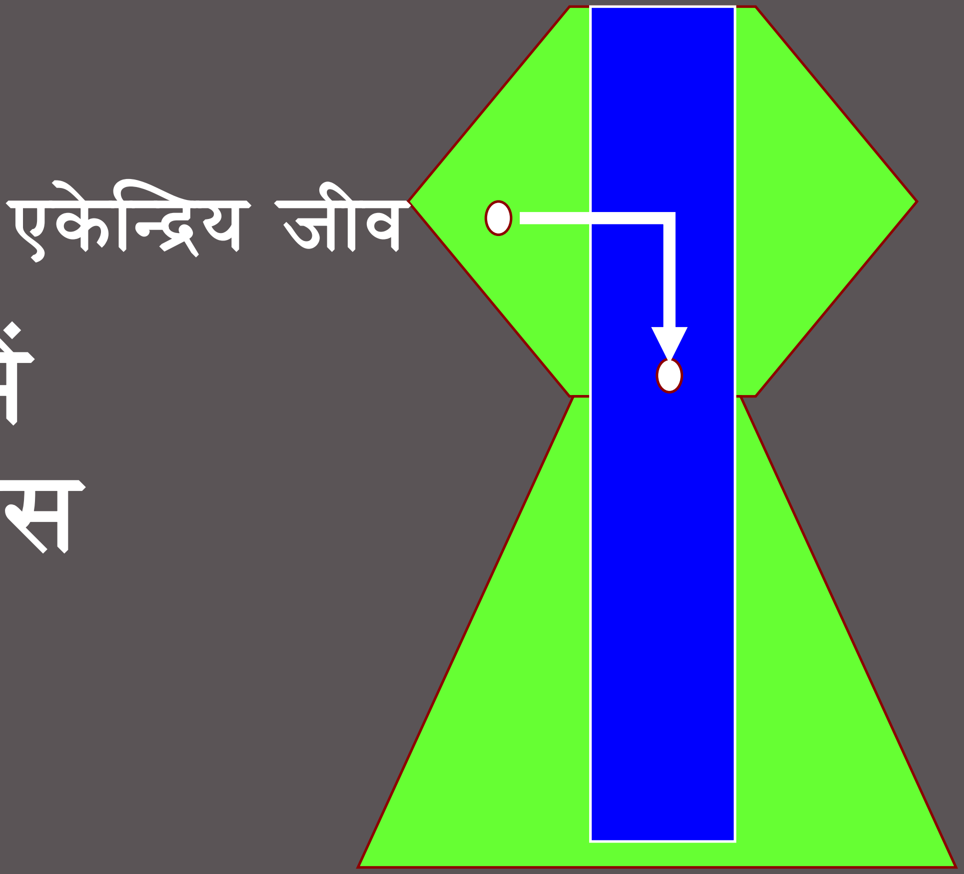

fppt.com

मारणान्तिक समुद्घात के समय

- मरण के अन्तर्मुहूर्त पूर्व अगली पर्याय के उत्पन्न होने के स्थान तक आत्म-प्रदेशों का फैलना मारणांतिक समुद्घात कहलाता है ।
- कोई त्रसजीव त्रसनाली के बाहर एकेन्द्रियों में उत्पन्न होने वाला है, वह मारणांतिक समुद्घात करता है, तब वह त्रस ही है ।
- ऐसी स्थिति में त्रसजीव त्रसनाली के बाहर पाया गया ।

fppt.com

केवली समुद्घात के समय

- केवली भगवान के निर्वाण के अन्तर्मुहूर्त पूर्व आत्मप्रदेश सर्वलोक में फैलते हैं, वह केवली समुद्घात कहलाता है ।
- उस समय भी त्रसजीव (केवली भगवान) लोकनाली के बाहर प्राप्त होते हैं ।
- इन तीन अवस्थाओं को छोड़कर त्रसजीव त्रसनाली के बाहर नहीं पाए जाते हैं ।

fppt.com

पुढवीआदिचउण्हं, केवलिआहारदेवणिरयंगा।
अपदिट्ठिदा णिगोदेहिं, पदिट्ठिदंगा हवे सेसा॥200॥

- अर्थ - पृथिवी, जल, अग्नि और वायुकायिक जीवों का शरीर तथा केवलियों का शरीर, आहारकशरीर और देव-नारकियों का शरीर बादर निगोदिया जीवों से अप्रतिष्ठित है। शेष वनस्पतिकाय के जीवों का शरीर तथा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय तिर्यंच और मनुष्यों का शरीर निगोदिया जीवों से प्रतिष्ठित है ॥200॥

fppt.com

निगोदिया जीव किन जीवों के शरीरों में नहीं होते हैं?

8 प्रकार के जीवों के शरीर

4	2	1	1
पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु	देव, नारकी	आहारक शरीर	केवली भगवान

fppt.com

मसुरंबुबिंसूई, कलावधयसण्णिहो हवे देहो।
पुढवीआदिचउण्हं, तरुतसकाया अणेयविहा॥201॥

- अर्थ - मसूर (अन्नविशेष), जल की बिन्दु, सुइयों का समूह, ध्वजा, इनके सदृश क्रम से पृथिवी,अप्, तेज, वायुकायिक जीवों का शरीर होता है और वनस्पति तथा त्रसों का शरीर अनेक प्रकार का होता है ॥201॥

fppt.com

जीवों के शरीर का आकार

पृथ्वी	मसूर दाल	नोट—पृथ्वी, जल आदि का जो शरीर दिखता है वह अनेक जीवों के शरीरों के समूह रूप है।
जल	जल की बिन्दु	
अग्नि	सुइयों का समूह	
वायु	ध्वजा	
वनस्पति	अनेक प्रकार का	
त्रस	अनेक प्रकार का	

fppt.com

जह भारवहो पुरिसो वहइ भरं गेहिऊण कावलियं।
एमेव वहइ जीवो कम्मभरं कायकावलियं॥202॥

- अर्थ - जिस प्रकार कोई भारवाही पुरुष कावटिका के द्वारा भारका वहन करता है, उस ही प्रकार यह जीव कायरूपी कावटिका के द्वारा कर्मभार का वहन करता है ॥202॥

fppt.com

संसारी जीवों की काय का दृष्टांत

जैसे—	वैसे—
कोई पुरुष	संसारी जीव
कावड़िया के द्वारा	औदारिकादि काय के द्वारा
भार वहन करता है।	कर्मरूप भार वहन करता है।

fppt.com

मुक्ति का उपाय

जैसे	वैसे
वही पुरुष	कोई भव्य जीव
कावड़िया के भार को गिराकर	शरीररूपी कावड़िया में भरे कर्मरूपी भार को छोड़कर
अपने इष्ट स्थान में	लोक के अग्रभाग में
उस भारजनित दु:ख के चले जाने से	कर्मभार जनित अनेक दु:खों के चले जाने से
सुखी होकर रहता है	सुखी होकर रहता है ।

fpp

जह कंचणमग्गिगयं, मुंचइ किट्टेण कालियाए य। तह कायबंधमुक्का, अकाइया झाणजोगेण॥203॥

- अर्थ - जिस प्रकार मलिन भी सुवर्ण अग्नि के द्वारा सुसंस्कृत होकर बाह्य और अभ्यन्तर दोनों ही प्रकार के मल से रहित हो जाता है उस ही प्रकार ध्यान के द्वारा यह जीव भी शरीर और कर्मबंध दोनों से रहित होकर सिद्ध हो जाता है ॥203॥

fppt.com

अकायिक मुक्त जीव

जैसे—	वैसे—
* लोक में मलसहित सोना	* निकट भव्य जीव
• अग्नि द्वारा तापने पर • अन्तरंग — पारा आदि भावना से संस्कारयुक्त • बहिरंग — प्रज्वलित अग्नि में जलकर	• ध्यान द्वारा • अन्तरंग — धर्म्य और शुक्ल ध्यान की भावना से संस्कृत • बहिरंग — तप रूपी अग्नि विशेष से
* बाह्य मल—किट्टिका	* बाह्य मल—काय
* अंतरंग मल—श्वेतादिरूप अन्य वर्ण	* अंतरंग मल—कर्म
* से रहित हो शुद्ध हो जाता है	* से सर्वथा रहित होने पर शुद्ध हो जाता है

आउड्ढरासिवारं लोगे अण्णोण्णसंगुणे तेऊ।
भूजलवाऊ अहिया पडिभागोऽसंखलोगो दु॥204॥

- अर्थ – शलाका त्रय निष्ठापन की विधि से लोक का साढ़े तीन बार परस्पर गुणा करने से तेजस्कायिक जीवों का प्रमाण निकलता है।
- पृथिवी, जल, वायुकायिक जीवों का उत्तरोत्तर तेजस्कायिक जीवों की अपेक्षा अधिक-अधिक प्रमाण है।
- इस अधिकता के प्रतिभागहार का प्रमाण असंख्यात लोक है ॥204॥

fppt.com

तैजसकायिक जीवराशि

- लोक का साढ़े तीन बार परस्पर गुणा करने पर तैजसकायिक जीवों का प्रमाण निकलता है ।
- इस राशि को निकालने के लिए लोक का शलाका-त्रय-निष्ठापन करना है ।

fppt.com

शलाका त्रय निष्ठापन

- तीन राशियां स्थापित करनी-

    1. विरलन 2. देय 3. शलाका

- एक बार विरलन-देय करके शलाका में से एक घटाना ।
    - हर बार विरलन देय विधान करने पर एक-एक शलाका कम-कम करते जाना
- जब शलाका शून्य हो जाय तो वह एक बार निष्ठापन है।
- जो अंत में राशि आयेगी वह महाराशि होगी ।

fppt.com

शलाका त्रय निष्ठापन

- इस महाराशि को पुनः शलाका, विरलन, देय रूप रखना ।
- पुनः जब तक शलाका राशि समाप्त नहीं हो जाती, तब तक विरलन-देय विधान से राशियां निकालना ।
- जब शलाका शून्य हो जाय तो वह दूसरी बार निष्ठापन है।
- जो अंत में राशि आयेगी वह महा-महाराशि होगी ।

fppt.com

शलाका त्रय निष्ठापन

- इस महा-महाराशि को पुनः शलाका, विरलन, देय-रूप रखना
- पुनः जब तक शलाका राशि समाप्त नहीं हो जाती, तब तक विरलन-देय विधान से राशियां निकालना ।
- जब शलाका शून्य हो जाय तो वह तीसरी बार निष्ठापन है।
- जो अंत में महा-महा-महाराशि होगी, वह मूल राशि का शलाका-त्रय निष्ठापन से प्राप्त राशि कहलाती है ।

fppt.com

उदाहरण - 2 का शलाका त्रय निष्ठापन

एक बार शलाका निष्ठापन

विरलन	देय	शलाका	प्राप्त राशि	
2	2	2	2 x 2 = 4	2-1 = 1
4	4	1	4x4x4x4= 256	1-1 = 0

दूसरी बार शलाका निष्ठापन

विरलन	देय	शलाका	प्राप्त राशि	
256	256	256	256^{256}	256-1 =255
256^{256}	256^{256}	255		

fppt.com

उदाहरण - 2 का शलाका त्रय निष्ठापन

तीसरी बार शलाका निष्ठापन

विरलन	देय	शलाका	प्राप्त राशि	
महामहाराशि	महामहाराशि	महामहाराशि	महामहामहाराशि	शलाका -1
महामहामहाराशि	महामहामहाराशि	महामहाराशि-1	महामहामहाराशि	(शलाका -1) -1
				....
....	....	....	.... महामहामहामहाराशि	शलाका= 0

fppt

- अब वास्तविक गणित में लोक का शलाका-त्रय-निष्ठापन करना ।
- जो अन्त में राशि आयी, उसे पुन: शलाका, देय और विरलन बनाओ ।
- परन्तु शलाका को थोड़ा कम करेंगे ।
- चौथी बार की शलाका राशि =
  - शलाका त्रय निष्ठापन का फल — प्रथम बार स्थापित शलाका — द्वितीय बार स्थापित शलाका — तृतीय बार स्थापित शलाका
- पुन: पूर्वोक्त देय-विरलन की प्रक्रिया तब तक करो जब तक कि शलाका समाप्त नहीं हो जाती । तब जो महाराशि प्राप्त हुई है, वह लोक राशि का साढ़े तीन बार परस्पर गुणन कहलाता है । वही तेजसकायिक जीवराशि का प्रमाण है ।

fppt.com

अग्निकायिक आदि जीवों की संख्या

अग्निकायिक जीव	• असंख्यात लोक प्रमाण
पृथ्वीकायिक	• अग्निकायिक + $\frac{\text{अग्निकायिक}}{\text{असं. लोक}}$
जलकायिक	• पृथ्वीकायिक + $\frac{\text{पृथ्वीकायिक}}{\text{असं. लोक}}$
वायुकायिक	• जलकायिक + $\frac{\text{जलकायिक}}{\text{असं. लोक}}$

fppt.com

अपदिट्ठिदपत्तेया, असंखलोगप्पमाणया होंति।
तत्तो पदिट्ठिदा पुण, असंखलोगेण संगुणिदा॥205॥

- अर्थ - अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीव असंख्यात लोकप्रमाण हैं, और इससे भी असंख्यात लोकगुणा प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पतिकायिक जीवों का प्रमाण है ॥205॥
- अप्रतिष्ठित प्रत्येक = असंख्यात लोक
- सप्रतिष्ठित प्रत्येक = असंख्यात लोक × अप्र. प्रत्येक

fppt.com

क्या वायुकायिक से अप्रतिष्ठित प्रत्येक अधिक हैं ?

नहीं ।

अप्रतिष्ठित प्रत्येक वायुकायिक से असंख्यात गुणे हीन हैं ।

प्रत्येक वनस्पतिकायिक मात्र बादर ही हैं ।

इसलिए इनकी संख्या कम है ।

अप्रतिष्ठित प्रत्येक जीवराशी तेजकायिक से भी कम है ।

fppt.com

तसरासिपुढविआदी, चउक्कपत्तेयहीणसंसारी।
साहारणजीवाणं, परिमाणं होदि जिणदिट्ठं॥206॥

- अर्थ - सम्पूर्ण संसारी जीवराशि में से त्रस राशि का प्रमाण और पृथिव्यादि चतुष्क (पृथिवी, अप्, तेज, वायु) तथा प्रत्येक वनस्पतिकाय का प्रमाण जो कि ऊपर बताया गया है घटाने पर जो शेष रहे उतना ही साधारण जीवों का प्रमाण है, ऐसा जिनेन्द्रदेव ने कहा है ॥206॥

fppt.com

साधारण वनस्पति

संपूर्ण जीवराशि
— त्रसराशि
— पृथ्वीकायिक आदि 4 राशि
— प्रत्येक वनस्पति जीव राशि

fppt.com

सगसगअसंखभागो, बादरकायाण होदि परिमाणं।
सेसा सुहुमपमाणं पडिभागो पुव्वणिद्दिट्ठो॥207॥

- अर्थ - अपनी-अपनी राशि का असंख्यातवाँ भाग बादरकायिक जीवों का प्रमाण है और
- शेष बहुभाग सूक्ष्म जीवों का प्रमाण है।
- इसके प्रतिभागहार का प्रमाण पूर्वोक्त असंख्यात लोक प्रमाण है ॥207॥

fppt.com

बादर और सूक्ष्म जीवों का प्रमाण

बादर जीवों का प्रमाण	$\frac{\text{कुल राशि}}{\text{असंख्यात}}$
सूक्ष्म जीवों का प्रमाण	कुल राशि – बादर राशि

fppt.com

पृथ्वीकायिक

बादर	सूक्ष्म
असंख्यात एकभाग	असंख्यात बहुभाग

इसी प्रकार जल, अग्नि, वायु, साधारण वनस्पति में भी असंख्यात एकभाग बादर जीव हैं और असंख्यात बहुभाग सूक्ष्म जीव हैं ।

fppt.com

पृथ्वीकायिक

बादर	सूक्ष्म
एकभाग	बहुभाग

जैसे कुल पृथ्वीकायिक = 256 ; असंख्यात = 8

तो बादर जीव = $\frac{256}{8}$ = 32 यह एकभाग है

सूक्ष्म जीव = 256 – 32 = 224 अथवा

$\frac{256}{8} \times (8 - 1) = \frac{256}{8} \times 7 = 224$ यह बहुभाग है ।

fppt.com

सुहुमेसु संखभागं, संखा भागा अपुण्णगा इदरा।
जस्सि अपुण्णद्धादो, पुण्णद्धा संखगुणिदकमा॥208॥

- अर्थ - सूक्ष्म जीवों में अपनी-अपनी राशि के संख्यात भागों में से एक भागप्रमाण अपर्याप्तक और बहुभागप्रमाण पर्याप्तक हैं। कारण यह है कि अपर्याप्तक के काल से पर्याप्तक का काल संख्यात गुणा है ॥208॥

fppt.com

सूक्ष्म पृथ्वीकायिक

अपर्याप्त	पर्याप्त
संख्यात एकभाग	संख्यात बहुभाग

इसी प्रकार सभी सूक्ष्म जीवों में समझना ।

fppt.com

सूक्ष्म पृथ्वीकायिक

अपर्याप्त	पर्याप्त
एकभाग	बहुभाग

जैसे सूक्ष्म पृथ्वीकायिक = 224 ; संख्यात = 4

सूक्ष्म अपर्याप्त $= \frac{224}{4} = 56$ यह एकभाग है ।

सूक्ष्म पर्याप्त $= \frac{224}{4} \times (4 - 1) = \frac{224}{4} \times 3 = 168$ यह बहुभाग है ।

fppt.com

पल्लासंखेज्जवहिद, पदरंगुलभाजिदे जगप्पदरे।
जलभूणिपबादरया पुण्णा आवलि असंखभजिदकमा॥209॥

- अर्थ - बादर पर्याप्त जलकायिक जीव जगतप्रतर भाजित पल्य के असंख्यातवें भाग से भक्त प्रतरांगुल प्रमाण है।
- इसमें उत्तरोत्तर आवली के असंख्यातवें भाग-आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देने पर क्रमशः बादर पर्याप्त पृथिवीकायिक, सप्रतिष्ठित प्रत्येक पर्याप्त एवं अप्रतिष्ठित प्रत्येक पर्याप्त जीवों का प्रमाण प्राप्त होता है॥209॥

fppt.com

बादर पर्याप्त - अपर्याप्त जीव

बादर पर्याप्त जलकायिक	• $\frac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल / प / असं.}}$
बा० प० पृथ्वीकायिक	• बा० प० जल० + $\frac{\text{बा० प० जल०}}{\text{आ / असं.}}$
बा० प० सप्रति० वन०	• बा० प० पृथ्वीकायिक + $\frac{\text{बा० प० पृथ्वीकायिक}}{\text{आ/ असं.}}$
बा० प० सप्रति० वन०	• बा० प० सप्र० वन० + $\frac{\text{बा० प० सप्र० वन०}}{\text{आ / असं.}}$

विशेष : पर्याप्तकों में सप्रतिष्ठित वनस्पति से अप्रतिष्ठित वनस्पति अधिक होती है ।

fppt.com

विंदावलिलोगाणमसंखं संखं च तेउवाऊणं। पज्जत्ताण पमाणं, तेहिं विहीणा अपज्जत्ता॥210॥

- अर्थ - घनावलि के असंख्यात भागों में से एक भागप्रमाण बादर पर्याप्त तेजस्कायिक जीवों का प्रमाण है और
- लोक के संख्यात भागों में से एक भागप्रमाण बादर पर्याप्त वायुकायिक जीवों का प्रमाण है।
- अपनी-अपनी सम्पूर्ण राशि में से पर्याप्तकों का प्रमाण घटाने पर जो शेष रहे वही अपर्याप्तकों का प्रमाण है ॥210॥

fppt.com

अपनी-अपनी राशि में से पर्याप्त जीवों का प्रमाण घटाने पर अपर्याप्त जीवों की संख्या होती है ।

बा० प० अग्निकायिक

$$\frac{(\text{आवली})^3}{\text{आ / असं.}} = \frac{\text{घनावली}}{\text{आ / असं.}}$$

बा० प० वायुकायिक

$$\frac{\text{लोक}}{\text{असं.}}$$

fppt.com

साहारणबादरेसु असंखं भागं असंखगा भागा।
पुण्णाणमपुण्णाणं, परिमाणं होदि अणुकमसो॥211॥

- अर्थ - साधारण बादर वनस्पतिकायिक जीवों का जो प्रमाण बताया है उसके असंख्यात भागों में से एक भागप्रमाण पर्याप्त और बहुभागप्रमाण अपर्याप्त हैं ॥211॥

fppt.com

बादर साधारण वनस्पति

- पर्याप्त
  - असंख्यात एकभाग
- अपर्याप्त
  - असंख्यात बहुभाग

fppt.com

आवलिअसंखसंखेणवहिदपदरंगुलेण हिदपदरं।
कमसो तसतप्पुण्णा पुण्णूणतसा अपुण्णा हु॥212॥

- अर्थ - आवली के असंख्यातवें भाग से भक्त प्रतरांगुल का भाग जगतप्रतर में देने से जो लब्ध आवे उतना ही सामान्य त्रसराशि का प्रमाण है और
- संख्यात से भक्त प्रतरांगुल का भाग जगतप्रतर में देने से जो लब्ध आवे उतना पर्याप्त त्रस जीवों का प्रमाण है।
- सामान्य त्रसराशि में से पर्याप्तकों का प्रमाण घटाने पर शेष अपर्याप्त त्रसों का प्रमाण निकलता है ॥212॥

fppt.com

त्रस जीवों की संख्या

कुल त्रस	पर्याप्त	अपर्याप्त
असं. जगत श्रेणी अथवा जगत प्रतर / प्रतरांगुल / आवली / असं.	कुल त्रस / असं. जगत प्रतर / (प्रतरांगुल / संख्यात) (त्रसों में पर्याप्त पर्याय दुर्लभ है)	कुल त्रस का असं. बहुभाग कुल त्रस—पर्याप्त त्रस

$$\text{त्रस} = \cfrac{\text{जगतप्रतर}}{\cfrac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{असंख्यात}}}$$

पर्याप्त	अपर्याप्त
असंख्यात एकभाग	असंख्यात बहुभाग
$\dfrac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल / सं}}$	$\dfrac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल / सं.}}$

fppt.com

आवलिअसंखभागेणवहिदपल्लूणसायरद्धछिदा।
बादरतेपणिभूजलवादाणं चरिमसागरं पुण्णं॥213॥

- अर्थ - आवली के असंख्यातवें भाग से भक्त पल्य को सागर में से घटाने पर जो शेष रहे उतने बादर तेजस्कायिक जीवों के अर्धच्छेद हैं और
- अप्रतिष्ठित प्रत्येक, प्रतिष्ठित प्रत्येक, बादर पृथ्वीकायिक, बादर जलकायिक जीवों के अर्धच्छेदों का प्रमाण क्रम से आवली के असंख्यातवें में भाग का दो बार, तीन बार, चार बार, पाँच बार पल्य में भाग देने से जो लब्ध आवे उसको सागर में घटाने से निकलता है और
- बादर वातकायिक जीवों के अर्धच्छेद पूर्ण सागर प्रमाण है ॥213॥

fppt.com

बादर अग्निकायादिक 6 राशि—विशेष

जीव	अर्धच्छेद राशि	
बादर अग्नि <	सागर – $\frac{\text{पल्य}}{\text{आवली / असं.}}$	छहों राशिया उत्तरोत्तर असं. लोक गुणित है ।
अप्रतिष्ठित प्रत्येक <	सागर – $\frac{\text{पल्य}}{(\text{आवली / असं.})^2}$	
प्रतिष्ठित प्रत्येक <	सागर – $\frac{\text{पल्य}}{(\text{आवली / असं.})^3}$	
बादर पृथ्वी <	सागर – $\frac{\text{पल्य}}{(\text{आवली / असं.})^4}$	
बादर जल <	सागर – $\frac{\text{पल्य}}{(\text{आवली / असं.})^5}$	
बादर वायु	सागर	

fppt.com

ते वि विसेसेणहिया, पल्लासंखेज्जभागमेत्तेण।
तम्हा ते रासीओ असंखलोगेण गुणिदकमा॥214॥

- अर्थ - ये प्रत्येक अर्धच्छेद राशि पल्य के असंख्यातवें-असंख्यातवें भाग उत्तरोत्तर अधिक हैं। इसलिये ये सभी राशि (तेजस्कायिकादि जीवों के प्रमाण) क्रम से उत्तरोत्तर असंख्यात लोकगुणी है ॥214॥

fppt.com

- ये प्रत्येक जीवराशी के छेद $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ से अधिक हैं, इसलिये उत्तरोत्तर जीवों का प्रमाण असंख्यात लोक गुणा है ।
- **उदाहरण** — किसी राशि के छेद 5 हैं, तो राशि है → $2^5 = 32$
- किसी राशि के छेद पूर्व राशि से 3 अधिक हैं, तो राशि होगी
- → $2^{(5\ +\ 3)} = 32 \times 2^3 = 256$
- याने जितने छेद अधिक हैं, उतनी बार 2 का गुणा करने पर जो राशि आए, उतनी गुणी लब्ध राशि होती है ।

fppt.com

- बादर अग्निकायिक $= (2)^{(\text{सा} - \frac{\text{प}}{\text{असं.}})}$
- अप्रति. प्रत्येक $= (2)^{(\text{सा} - \frac{\text{प}}{\text{असं.} \times \text{असं.}})}$
- यहाँ प्रथम राशि के छेद से द्वितीय राशि के छेद $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ से अधिक हैं
- अतः प्रथम राशि से द्वितीय राशि $(2)^{\frac{\text{प}}{\text{अ}}}$ गुणा है
- चूँकि $(2)^{\frac{\text{प}}{\text{अ}}}$ = असंख्यात लोक आता है ।
- अतः प्रथम राशि से द्वितीय राशि असंख्यात लोक गुणी है ।

fppt.com

- इसी प्रकार द्वितीय से तृतीय राशि के छेद $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ से अधिक हैं इसलिए तृतीय राशि असंख्यात लोक गुणी है

- इसी प्रकार शेष राशियों के लिए भी समझना चाहिए ।

fppt.com

दिण्णच्छेदेणवहिद, इट्ठच्छेदेहिं पयदविरलणं भजिदे। लद्धमिदइट्ठरासीणण्णोण्णहदीए होदि पयदधण॥215॥

- अर्थ - देयराशि के अर्धच्छेदों से भक्त इष्ट राशि के अर्धच्छेदों का प्रकृत विरलन राशि में भाग देने से जो लब्ध आवे उतनी जगह इष्ट राशि को रखकर परस्पर गुणा करने से प्रकृत धन होता है ॥215॥

fppt.com

गणित सूत्र

- यदि $(2)^{16} = 65536$ होता है, तो $(2)^{64} = (65536)^{?}$
- सूत्र = $\dfrac{\text{प्रकृत विरलन राशि}}{\dfrac{\text{इष्ट के छेद}}{\text{देय के छेद}}}$
- विरलन राशि = 64;
- इष्ट विरलन राशि के छेद = 65536 के छेद = 16
- देय राशि के छेद = 2 के छेद = 1

fppt.com

गणित सूत्र

- इसे सूत्र में रखने पर:
- $\frac{64}{\frac{16}{1}} = \frac{64}{16} = 4$
- अर्थात् $2^{64} = (65536)^4$

fppt.com

सूत्र का इस प्रकरण में प्रयोग

- यदि $(2)^{\text{लोक के छेद}}$ = लोक होता है, तो $(2)^{\text{सागर}}$ = $(\text{लोक})^{?}$ होगा? यह निकालने हेतु इस सूत्र का प्रयोग करते हैं ।
- यहाँ पर विरलन राशि = सागर;
- इष्ट विरलन राशि के छेद = लोक के छेद = 3 छे छे छे असं.
- देय राशि के छेद = 2 के छेद = 1

fppt.com

- इसे सूत्र में रखने पर:

- $\dfrac{\text{सागर}}{\dfrac{\text{लोक के छेद}}{1}} = \dfrac{\text{सागर}}{\text{लोक के छेद}}$

- $\dfrac{\text{संख्यात प}}{\text{3 छे छे छे असं.}} = \dfrac{\text{प}}{\text{असं.}}$

- अर्थात् इतनी बार लोक का परस्पर गुणा करने पर बादर वायुकायिक जीवराशि होती है ।

- $(2)^{\text{सागर}} = (\text{लोक})^{\frac{\text{प}}{\text{असं.}}}$

fppt.com

इसी को आधुनिक गणित से निकालते हैं

- $2^{64} = (65536)^{?}$
- इसे हल करने के लिए दोनों तरफ log लेंगे ।
- $\log_2 (2)^{64} = \log_2 (65536)^{N}$
- $64 \times \log_2 2 = N \times \log_2 65536$
- $64 \times 1 = N \times 16$
- $\frac{64}{16} = N$
- इस प्रकार log से उत्तर आता है । जो आचार्यों ने हजारों वर्ष पूर्व ग्रन्थों में दिया है । याने log theory के सूत्र हजारों साल से जैन शास्त्रों में लिपिबद्ध हैं ।

fppt.com

तिर्यंचों की आयु

जीव	उत्कृष्ट आयु	जीव	उत्कृष्ट आयु
मृदु (शुद्ध) पृथ्वीकायिक	12,000 वर्ष	तीन इन्द्रिय	49 दिन
कठोर पृथ्वीकायिक	22,000 वर्ष	चार इन्द्रिय	6 मास
जलकायिक	7,000 वर्ष	पंचेन्द्रिय जलचर	1 कोटि पूर्व
वायुकायिक	3,000 वर्ष	सरीसर्प, रेंगने वाले पशु	9 पूर्वांग
अग्निकायिक	3 दिन	सर्प	42,000 वर्ष
वनस्पतिकायिक	10,000 वर्ष	पक्षी	72,000 वर्ष
दो इन्द्रिय	12 वर्ष	चौपाये पशु	3 पल्य

सभी की जघन्य आयु अन्तर्मुहूर्त है ।

fppt.com

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by
Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 0731-2410880 , 94066-82889

fppt.com